प्रातःक्लास 8/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। यूँ तो है डबल ओमशानित; क्योंकि दो आत्माएँ हैं। दोनों आत्माओं का स्वधर्म है शांत। बाप का भी स्वधर्म है शांत। बच्चे वहाँ शान्ति में रहते हैं। उसको ही कहा जाता है शान्तिधाम। बाप भी वहाँ रहते हैं। बाप तो सदैव ही पावन है। बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं वह पुनर्जन्म ले अपवित्र बनते हैं। बाप बच्चों को कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझो। आत्मा जानती है परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है। शान्ति का सागर है। उनकी महिमा है ना। वह सभी का बाप है और सर्व की सद्गति दाता भी है। तो सभी का बाप के वर्से पर हक ज़रूर लगता है। बाप से वर्सा क्या मिलता है। बच्चे जानते हैं बाप स्वर्ग़ का रचयिता है तो ज़रूर स्वर्ग़ का वर्सा ही देगा। और देंगे भी ज़रूर नर्क में। नर्क का वर्सा दिया है रावण ने। इस समय सभी नर्कवासी हैं। तो ज़रूर वर्सा रावण से मिला है। नर्क और स्वर्ग़ दोनों हैं। यह कौन सुनती है? आत्मा। अज्ञान काल में भी सभी कुछ आत्मा ही करती है; परन्तु देह–अभिमान कारण समझते हैं शरीर सब कुछ करता है। हमारा स्वधर्म है, शांत। यह भूल जाते हैं हम आत्मा हैं। हमारा स्वधर्म है शांत। रहने वाले भी शान्तिधाम के हैं। यह कोई भी नहीं जानते। इतने बड़े विद्वान–पण्डित आदि कुछ भी नहीं जानते। यह भी समझना चाहिए सच्च खण्ड ही फिर झूठ खण्ड बनता है। भारत स्वर्ग़ सच्च खण्ड था। फिर रावण राज्य झूठ खण्ड भी बनता है। यह भी तो कॉमन बात है। मनुष्य क्यों नहीं समझ सकते हैं; क्योंकि आत्मा तमोप्रधान हो गई है। जिसको ही पत्थर बुद्धि कहते हैं। पत्थर बुद्धि कैसे बने हैं? नर्क में गोता खाते–2 और दूसरा फिर ग्लानी की है। जिसने भारत को स्वर्ग़ बनाया, पूज्य बनाया वही फिर पुजारी बन गाली देने लगे। इसमें भी कोई का दोष नहीं। बाप बच्चों को समझाते हैं यह ड्रामा कैसे बना हुआ है। कैसे पूज्य से पुजारी बने। बाप समझाते हैं आज से 5000 वर्ष पहले भारत में आदि सनातन देवी–देवताओं का धर्म है। कल की बात है; परन्तु मनुष्य बिल्कुल भूले हुए हैं। यह शास्त्र आदि सभी भक्ति मार्ग के लिए बनाई हैं। शास्त्र है ही भाक्ति मार्ग के लिए न कि ज्ञान मार्ग के लिए। ज्ञान मार्ग का शास्त्र है नहीं। बाप ही कल्प–2 आकर बच्चों को नॉलेज देते हैं देवता पद के लिए। उनका शास्त्र बनता ही नहीं। बाप पढ़ाई पढ़ाते हैं यह ज्ञान फिर प्रायः लोप हो जाता है। सतयुग में कोई शास्त्र होता नहीं; क्योंकि वह तो है ज्ञान मार्ग की प्रारब्ध 21 जन्मों लिए। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है, आधा कल्प के लिए। फिर पीछे रावण का वर्सा मिलता है अल्पकाल के लिए। जिसको सन्यासी लोग काग विष्टा समान सुख कहते हैं। काग विष्टा समान सुख क्या यह भी तुम जातने हो। कुछ भी है नहीं। इनका नाम ही है दुःखधाम। कलियुग के पहले है द्वापर। इसको कहेंगे सेमी दुःखधाम। आत्मा ही 84 जन्म लेती है। नीचे उतरती है। बाप चढ़ाई चढ़ देते हैं; क्योंकि चक्र को फिरना ज़रूर है। नई दुनियाँ थी। आदि सनातन देवी–देवताओं का राज्य था। दुःख का नाम निशान न था; इसलिए दिखाते हैं शेर, बकरी भी इकट्ठे जल पीते हैं। वहाँ हिंसा आदि की बात ही नहीं। अहिंसा परमोधर्म देवी–देवता कहा जाता है। यहाँ है हिंसा। पहले–2 हिंसा है कामकटारी चलाना। सतयुग में विकारी होते ही नहीं। उन्हों की तो महिमा गाते हैं। आप सर्व गुण सम्पन्न.....। उस दुनियाँ के लिए भी कहते हैं वायसलेस वर्ल्ड। पवित्र नई दुनियाँ को, अपवित्र पुरानी दुनियाँ को कहा जाता है। यह कलियुग है आयरन एज्ड वर्ल्ड। इनको कोई गोल्डेन एज्ड तो नहीं कहेंगे। आयरन एज्ड पत्थर बुद्धि विशियस ठहरे। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। विशियस से वायसलेस, वायसलेस ये विशियस बनती है। यह भी नाटक बना हुआ है। सतयुग है शिवालय। वहाँ सभी हैं पावन, जिन्हों के चित्र भी हैं। शिवालय बनाने वाले शिवबाबा का चित्र भी है। भक्ति मार्ग में उनको अनेक नाम दे दिए हैं। वास्तव में नाम है एक। बाप को अपना शरीर तो है नहीं। खुद कहते हैं मुझे अपना परिचय देने वा रचना के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान सुनाने आना पड़ता है। मुझे आकर तुम्हारी सर्विस करनी होती है। तुम ही मुझे बुलाते हो हे पतित–पावन आओ। सतयुग में नहीं बुलाते हो। इस समय बहुत बुलाते हैं; क्योंकि विनाश सामने खड़ा है। भारतवासी जानते हैं यह

वही महाभारत लड़ाई है। फिर आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। बाप भी कहते हैं मैं राजाओं का राजा बनाने आया हूँ। आजकल तो महाराजा, बादशाह आदि है नहीं। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। यह है अनलॉफुल, इरिलीजियस, इनसॉलवेन्ट राज्य। बच्चे समझाते हैं हम भारतवासी सॉलवेन्ट थे। हीरे जवाहरों के महले थे। नई दुनियाँ थी नई से फिर पुरानी बनी है। हर चीज़ पुरानी होती है। जैसे मकान बनाते हैं फिर आखरीन आयु कम होती जावेगी। कहा जावेगा यह नया है यह आधा पुराना है। यह मध्यम है। हरेक चीज़ सतो. रजो. तमो. होती है। सारी दुनियाँ भी ऐसे ही सतो. रजो. तमो. में आती है। भगवानुवाच है ना भगवान माना ही भगवान। भगवान किसको कहा जाता है यह भी पत्थर बुद्धि समझते नहीं हैं। राजा–रानी तो है नहीं। यहाँ है प्रज़ीडेन्ट, प्राइम मिनिस्ट और उनके ढेर मिनिस्टर्स। सतयुग में तो है यथा राजा–रानी तथा प्रजा। फ़र्क भी बाप ने बताया है। सतयुग के जो मालिक हैं उन्हों का मिनिस्टर्स एडवाईज़र होते ही नहीं। दरकार ही नहीं। इस समय ही शिवबाबा से ताकत प्राप्त कर वह पद लेते हैं। इस समय बाप से ऊँच राय मिलती है जिससे ऊँच पद पाया। फिर कोई से राय लेंगे ही नहीं। वहाँ वज़ीर होते ही नहीं। वज़ीर तब होते हैं जब वाम मार्ग में जाते हैं। अक़्ल चट हो जाता है। मूल बात है विकार की। देह–अभिमान से ही विकार होते हैं। उनमें काम है नम्बरवन। बाप कहते हैं यह काम महाशत्रु है। उनपर जीत पानी है। बाप ने बहुत बार समझाया है अपन को आत्म समझो। अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में रहती है। यहाँ ही कर्मों को कुटना होता है। सतयुग में नहीं। वह है सुखधाम। बाप आकर तुम बच्चों को शान्तिधाम–सुखधाम का वासी बनाते हैं। बाप डायरैक्ट आत्माओं से बाप करते हैं। सभी को कहते हैं आत्मा निश्चय बुद्धि होकर बैठो। देह–अभिमान छोड़ो। यह देह विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। तुम अपन को आत्मा समझ बैठो। यह ज्ञान और कोई में है नहीं। ज्ञान का पता न होने कारण भक्ति को ही ज्ञान समझ लिया है। अभी तुम बच्चे समझते हो भक्ति अलग है। ज्ञान से तो सद्गति होती है। अर्थात् भक्ति से दुगर्ति है कायदे अनुसार; क्योंकि यह है ही रावण राज्य। यह बातें कोई जानते ही नहीं हैं। भक्ति का सुख है अल्पकाल के लिए; क्योंकि पापात्मा बन जाते हैं। विकार में चले जाते हैं आधा कल्प के लिए। बेहद का वर्सा जो मिला था वह पूरा हुआ। अभी फिर बाप वर्सा देने आए हैं। जिसमें पवित्रता, सुख, शान्ति सभी मिल जाती है। तुम बच्चे जानते हो यह पुरानी दुनियाँ तो कब्रिस्तान बनना ही है। अभी इस कब्रिस्तान से से दिल हटाकर परिस्तान नई दुनियाँ से दिल लगाओ। जैसे लौकिक बाप मकान बनाते हैं तो बच्चों का बुद्धि योग पुराने मकान से निकल नए में लग जाता है। ऑफिस में बैठा होगा तो भी बुद्धि योग नए मकान तरफ होगा। वह है हद की बात। बेहद का बाप तो नई दुनियाँ स्वर्ग़ रच रहे हैं। कहते हैं, अभी पुरानी दुनियाँ से सम्बन्ध तोड़ एक मुझ बाप के साथ जोड़ो। तुम्हारे लिए नई दुनियाँ स्वर्ग़ स्थापन करने आया हूँ। अभी पुरानी दुनियाँ खलास होनी है। सारी पुरानी दुनियाँ इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में (स)वाहा होनी है। यह पुर(ा)ना झाड़ जड़–जड़ीभूत, तमोप्रधान हो गया है। अभी फिर नया बनना है। तो बाप समझाते हैं यह है नई बातें। जैसे मनुष्य बीमार(ी) में होपलेस हो जाते हैं ना। समझते हैं इनका बचना मुश्किल है। वैसे यह दुनियाँ भी होपलेस है। कब्रिस्तान बनना है। फिर उनको याद क्यों करना चाहिए। यह है बेहद का सन्यास। वह है हठयोगी सन्यासी। सिर्फ़ घर–बार छोड़कर जाते हैं। यह ज्ञान हठयोगी सन्यासियों पास है नहीं। भक्ति मार्ग में माताएँ बैठ उन हठयोगियों को गुरु करते हैं। उनके पांव धो पीते हैं। अभी सतगुरु और उन गुरुओं में कितना फ़र्क है। सतगुरु तो पूजा आदि कुछ भी नहीं कराते हैं। न पांव आदि पड़ना है। यह तो कहते हैं हम भी ओविडियन्ट सर्वेन्ट हैं। मैं बच्चों की सर्विस में आया हूँ। मुझे बुलाया है, बाबा हम पतित बन गए हैं। आकर पावन बनाओ। निमंत्रण देते हो ना हे बाबा आओ हम पतित दुःखी बन गए हैं। आप पतित दुनियाँ और पतित शरीर में आओ। निमंत्रण

देखो कैसा देते हैं। पतित बनाने वाला रावण सामने खड़ा है। जिसको जलाते रहते हैं। यह बहुत कड़ा दुश्मन है। जबसे यह रावण राज्य आया है तुमको आदि, मध्य, अंत दुःख मिला है। विषय सागर में गोता खाते रहते हैं। विख मिला गोया अमृत का प्याला मिला। अभी बाप कहते हैं विख छोड़ ज्ञान अमृत पियो। आधा कल्प रावण राज्य में तुमने विख पीया है। कितने दुःखी बन गये हो। इतने मतवाले बन जाते हो जो गाली बैठ देते हो। गाली भी इतनी देते हो कमाल करते हो। जो तुमको पावन विश्व का मालिक बनाते हैं उनको ही सबसे जास्ती गाली देते हो। मनुष्यों के लिए तो कहते हो 84 लाख योनियाँ और मुझे तो ठिक्कर–भित्तर में ठोक दिया है। अपने से भी जास्ती दुगर्ति कर दी है। यह भी ड्रामा है। तुमको हँसी कुड़ी में समझाते हैं। तुम्हारी दुगर्ति हुई है इस बात से। ठिक्कर–भित्तर सबमें ठोक दिया है। कब फिर कहते हैं कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। तो गोया जनावरों का अवतार हो गया। कच्छ–मच्छ का बच्चा हो जावेगा। कितनी गालियाँ देते हैं। बाप को गाली देते हैं गुप्त रीति। तब बाप कहते हैं, जब–2 भारत का यह हाल होता है। वह लोग तो फिर भी समझ है। कहते हैं ओ गॉड फादर। हमको लिबरेट करो, गाइड कर ले चलो। सीधी बात कहते हैं। भारतवासियों ने तो मिट्टी में मिला दिया है। भक्ति में 100 % मैड चैप्स बन पड़ते हैं। भगवान को बैठ गाली देते हैं। और कोई काम ही नहीं। गाली तब देते हैं जब विकारी बनते हैं; इसलिए बाप समझाते रहते हैं भक्ति मार्ग है ही दुगर्ति मार्ग। सीढ़ी उतरते तमोप्रधान बनते जाते हैं। अच्छे वा बुरे लक्षण आत्मा के ही होते हैं। आत्मा कहती है हम 84 जन्म भोगते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। यह भी अभी बाप ने समझाया है। ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर भी बाप आकर, उल्लू जो उल्टी लटक पड़े हैं उनको सुल्टा बनाते हैं; क्योंकि अपन को आत्मा के बदली शरीर समझ बैठे हैं। तो उल्टी हो गये ना। यह है भ्रष्टाचारी उल्लूओं की दुनियाँ। श्रेष्ठाचारी है अल्लाह की दुनियाँ। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों यहाँ तुम उल्टी होकर न सुनो। अपन को आत्मा समझ कर बैठे(ो)। उल्लू को अल्ला थोड़े ही मिलता है। अभी तुमको अल्ला, बाप मिला है तो सुल्टा बनाते हैं। रावण उल्टा बनाता है। फिर सुल्टा बनने से सीधे खड़े हो जाते हो। यह एक नाटक है। यह ज्ञान बाप ही बैठ समझाते हैं। भक्ति मार्ग है, ज्ञान मार्ग है। ज्ञान ज्ञान है भक्ति बिल्कुल अलग है। भक्ति है रात का मार्ग। रात में मनुष्य धक्के खाते हैं। शास्त्रों आदि में सभी हैं झूठी बातें। कहते हैं कैलाश में तालाब है वहाँ परियाँ रहती थी। पार्वती को अमर कथा सुनाई। अभी तुम अमर कथा सुन रहे हो ना। सिर्फ़ एक पार्वती को अमर कथा सुनाई क्या। यह तो बेहद की बात है। अमरलोक सतयुग, मृत्युलोक कलयुग को कहा जाता है। इनको काँटों का जंगल कहा जाता है। जंगल में जनावर ही रहते हैं। बाप को जानते ही नहीं। कहते भी हैं हे! परमपिता परमात्मा, है! भगवान; परन्तु जानते ही नहीं। तुम भी नहीं जानते थे। तुमको बाप ने आकर सुल्टा बनाया है। भगवान को अल्लाह कहा जाता है, अल्ला पढ़ाकर अल्ला पद देंगे ना; परन्तु भगवान एक है। इनको (ल.ना.) को भगवान–भगवती नहीं कहेंगे। यह तो पुनर्जन्म में आते हैं ना। मैंने ही इन्हों को पढ़ाकर दैवी गुणों वाला बनाया। तुम सभी ब्रदर्स हो। बाप के वर्से के हकदार हो। मनुष्य तो घोर–अंधियारे में हैं। आसुरी सम्प्रदाय है ना। गुरुओं ने घोर अंधियारे में डाला है। कहते हैं कलयुग तो अजन बच्चा है। बहुत वर्ष पड़े हैं। कितना अज्ञान अंधेरा में सोये पड़े हैं। यह भी खेल है। सोझरे में दुःख नहीं होता। यह भी तुम ही समझते हो। औरों को समझाते रहो। पहले–2 तो हरेक मनुष्य (को) बाप का परिचय देना है। दो बाप तो हरेक के होते हैं। हद का बाप हद का सुख देते हैं। बेहद का बाप बेहद का सुख देते हैं। शिवरात्रि मनाते हैं तो ज़रूर बाप आते हैं स्वर्ग़ स्थापन करने। जो स्वर्ग़ पास्ट हो गया है वह फिर स्थापन हो रही है। अभी है तमोप्रधान दुनियाँ। नर्क। ड्रामा अनुसार जब एक्युरेट समय होता है तब फिर मैं अपना पार्ट बजाता हूँ। मैं तो हूँ निराकार। मुझे मुख तो ज़रूर चाहिए ना। बैल वा गदहे का

थोड़े ही होगा। मनुष्य मुख इनका लेता हूँ जो बहुत जन्मों के अंत के जन्म में, वानप्रस्थ अवस्था में है। उनमें प्रवेश करता हूँ। पहले–2 कौन बिछुड़ कर पार्ट बजाने आते हैं। पहले–2 नम्बरवन में है श्री कृष्ण। विश्व का मालिक। फिर 84 जन्म लेते–2 क्या आकर बना है। गांव का छोरा यह भी गाया हुआ है। यह अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। बुद्धू हैं। यह तो ज़रूर सुनी–सुनाई बातें जातने हैं। इस बुद्धू ने गुरु भी बहुत किए हैं। जब अन्तिम जन्म में पूरा बुद्धू बन जाते हैं, तब मैं इनमें प्रवेश कर फिर इनको पहले नम्बर में ले आता हूँ। इनके साथ तुम सभी भी बुद्धू थे। वह द्वियाये और यह विद्वयायों बुद्धू ही पढ़ते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह ज्ञान तो बहुत ही सहज है। सिर्फ़ मुझ बाप को याद करो तो स्वर्ग़ का वर्सा मिलेगा। पहले नम्बर में जो देवताएँ थे वही पुनर्जन्म लेते–2 बिल्कुल बुद्धू बन जाते हैं। यह भी खेल है। जो कुछ होता आया है यह फिर भी होगा। यह बड़ा ही वण्डरफुल अविनाशी खेल है। बाप ने ड्रामा का चक्र समझाया है। बुद्धू बनना, फिर विश्व का मालिक बनना। सांवरा और गोरा। श्याम और सुन्दर भी ल.ना. को नहीं कहते। इन छोटे बच्चे को पकड़ लिया है। भील भी इनको बनाया है। गैयाँ चराने वाला। बाप अपना बतलाते हैं ना हम गैया तो गदहे और बकरियाँ भी चराई हैं। यह सारा खेल। यह बड़ा मज़े का खेल है। खेल को देखते बड़ा हर्षित होना चाहिए। मनुष्य खेल देखते हैं तो हँसते भी हैं, रोते भी हैं। इस बेहद के खेल को समझना है। मनुष्य हैं सभी खेल के एक्टर्स; परन्तु जंगली हैं। ड्रामा के आदि, मध्य, अंत को जानते ही नहीं। तो जंगली कहेंगे ना। एक दो को कांटा लगाते रहते हैं। अभी बाप ऑर्डीनेन्स निकालते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पानी है। इनको जीतने से तुम जगत जीत बनेंगे। यह सभी छोड़ो। इनसे तो मिलता कुछ भी नहीं है। जैसे वह लोग कहते हैं शराब पीना बन्द करो। भगवान फिर कहते हैं विख पीना बन्द करो। पवित्र बनो। यह तो सभी का बाप है ना। बच्चों को कहते हैं तुम काम चिक्षा पर चढ़ने से काले आयरन एज्ड बन पड़े हो। अभी ज्ञान चिक्षा पर बैठो। एक जन्म पवित्र बनो तो 21 जन्म पवित्र बन जायेंगे। वहाँ कब ख़्याल भी नहीं आवेगा। सतयुग है ही पवित्र दुनियाँ। यह दुनियाँ तो विनाश होनी है। मनुष्य इतने लाख आदि कमाते हैं। कोई के भी बच्चे वारिस (वर्सा) पा न सकेंगे। सभी की मिलकियत इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जावेगी। मनुष्य अज्ञान काल में दान करते हैं तो दूसरे जन्म में अल्पकाल लिए सुख मिलता है। हॉस्पिटल बनाते हैं। दूसरे जन्म में अच्छी हेल्थ मिल जाती है। ज़रूर अच्छे कर्म किए हैं जिसका फल मिला है सो भी एक जन्म के लिए। ग़रीब को पैसे आदि दान करते हैं तो दूसरे जन्म में पैसे मिलते हैं; परन्तु फिर बीमार पड़ सकते हैं। बाकी अल्पकाल लिए धन मिल जाता है। अभी बाप कहते हैं मैं हूँ डायरैक्ट। जिस र(थ) में हमने प्रवेश किया है उसने भी देखो क्या किया है। करनकरावन हार है ना। अभी तुम कह सकते हो बाबा कराते हैं। भक्ति मार्ग में थोड़े ही कराते हैं वा प्रेरणा देते हैं। सारा दिन प्रेरणा ही देते रहेंगे क्या? प्रेरणा का कोई दुकान निकला है क्या। बाप सम्मुख कहते हैं मैं आकर पढ़ाता हूँ। यह किसकी बुद्धि में भी नहीं है। यह बाप, टीचर, गुरु एक ही है। बाप हमारी पालना भी करते हैं। पढ़ाते भी हैं। पावन भी बनाते हैं। नई दुनियाँ बन जाती है तो फिर हिसाब–किताब चुक्तू कर चले जावेंगे। बाकी थोड़े रहेंगे। पुरानी दुनियाँ में 500 करोड़। नई दुनियाँ में तो होते ही बहुत थोड़े हैं। हरेक चित्रों में यह बातें लगी हुई हैं। जिन्होंने बहुत भक्ति की होगी वही आकर ज्ञान लेंगे। यह चक्र फिरता रहता है। फर्स्ट सो लास्ट में जाता है। लास्ट वाला फिर फर्स्ट में जाता है। यह बाप बैठ समझाते हैं। वह कुछ पढ़ा है क्या। भगवान को माँ–बाप, टीचार, गुरु आदि हैं? कुछ भी नहीं। फिर भी भगवान को क्यों कहते ज्ञान का सागर, पतित–पावन..... कहते हैं भगवान ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों, शास्त्रों का सार सुनाते हैं। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र। उनका सार बैठ बाप बतलाते हैं। वह तो कुछ पढ़ा हुआ नहीं है। तो फिर गुरु कहाँ से आया। अभी शिवबाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारा वर्सा है ही। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।